Late. Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth Dist. Parbhani

INAUGRAL SESSION

उदघाटन सत्र का सार

Interdisciblnary ICSSR Sponsored one day national Seminar on

INDIAN SOCIETY AND IDEPLOGY OF DISABILITY

Organized by

Late Ramesh Warpudkar ACS College Sonpeth, Dist.Parbhani

05th Oct 2019

INAUGRAL SESSION

कै.रमेश वरपुडकर महाविद्यालय सोनपेठ ICSSR पुरुस्कृत व्दारा आयोजित एक दिवसीय अंतर्विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का उदघाटन दि.०५ अक्तु २०१९ प्रातः १०.३० को कै.रमेश वरपुडकर महाविद्यालय के सांस्कृतिक सभागार में संपन्न हुआ! उदघाटन समारोह के उदघाटक के रुप में स्वा.रा.ती.म.विश्वविद्यालय के प्र कुलपती डॉ.जोगेंद्रसिंह बिसेनजी मौजुद थे, तो अध्यक्ष के रुप में भूतपुर्व विधायक मा.श्री.व्यंकटरावजी कदम मौजुद थे, विशेष अतिथी के रुप में संस्थाध्यक्ष मा.श्री.परमेश्वररावजी कदम, प्रधानाचार्य डॉ.वसंत सातपुते, प्रा.डॉ.महेंद्रकुमार ठाकुरदास जेष्ट हिन्दीं साहित्यिक उपस्थित थे साथ ही प्रा.आसाराम लोमटे, प्रा.डॉ.वडचकर शिवाजी संयोजक के रुप में उपस्थित थे उदघाटक समारोह में प्र.कुलपती जोगेंद्रसिंह बीसेनजी ने विकलांगता का स्वरुप अत्यंत व्यापक है. इसी व्यापकतामें भारतीय साहित्य विकलांगता को लेकर बहुत प्राचीन काल से विचार करने लगा है! प्राचीन काल में मनुष्य कहीं आग में झुलसकर तो कंही पशुओं का शिकार होकर विकलांग बन जाते थे! मनुष्य ने अपने बुध्दि के बलपर अनेकों नये नये साधन जुटाये है, फिर भी विकलांगता की समस्या पर वह विजय नही पा सका है! विकलांगता लोक आज भी शारीरीक, आर्थिक और सामाजिक यातना को भोग रहे है!

Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

विश्व की कुल आबादी के लगभग २५ प्रतिशत लोग विकलांगता की समस्या से बाधित है विकलांगता के पिछे अनेकों कारण है इनमें युध्द, अनेकों बीमारिंया और महामारिया,बढती आबादी, प्राचीन धारणांऐ, संसाधनो का अभाव मनुष्य की भागदोड, सुरक्षा उपयोंका अभाव, मशीनो का प्रयोग, वाहनो की बढती संख्या, प्रकृती के साथ अन्याय, भूस्सखलन, भुचाल, अतिवृष्टी दवाओं का अतिरिक्त प्रयोग, लापरवाही बढता शहरी करण गरीबी आदि अनेकानेक कारणोंसे विकलांगता की समस्या राक्षस बनकर हमारे सामने खडी है. उदघाटन समारोह के अध्यक्षीय भाषण में मा.श्री.व्यंकटरावजी कदम साहाब ने प्राचीन काल में विकलांग व्यक्तियों का काफी बुरा हाल रहा है. परंतु वर्तमान समाज के लिए एक बहुत बडी समस्या है! इसे आज चुनौति के रुपमें स्विकार करके निदान के लिए विभिन्न प्रकार के उपया योजनाऔं का प्रयोग किया जा सकता है! आज चिकित्सा के क्षेत्रोंमें अत्याधुनिक अविष्कारों के कारण विकलांगता की यह विडंबना है कि उसे तिरस्कृत, अपमानित, उपेक्षित, हास्य या समाज का अपात्र प्रमाणित किया जाता है ! उसे समाज की मुख्य धारा से जोडने के बजाय उसे अपमानित करने का प्रयास किया जाता है! विकलांग के प्रति सामाजिक नकारत्मकता के रवयों को विदवत साहित्यकारों की लेखनी के माध्यमसे परिवर्तित किया जा सकता है! विकलांगो के आत्मविश्वास को और आत्मनिर्भरता को बढालेवाली रचनाओं का सृजनकर उने आत्मसन्मान दिया जा सकता है ऐसा अपना मंतव्य व्यक्त किया! इस समारोह का प्रस्ताविक संयोजक प्रा.डॉ. वडचकर शिवाजी ने किया सुत्रसंचालक डॉ.मुक्ता सोमवंशी, प्रा.सखाराम कदम ने किया आभार ज्ञापन डॉ.वनिता कुलकर्णी ने किया.

बीजभाषन

द्वितीय गोष्ठीमें बीजभाषण हुआ गोष्टी १२.०० से ०१.३० तक चली इस गोष्टी के लिए बीजवक्ता के रुपमें डॉ.महेन्द्रकुमार ठाकुरदास जेष्ठ हिन्दीं साहित्यीक पुणे मौजुद थे! बीजवक्ता डॉ.ठाकुरदासजीने विकलांग को देखने की प्राचीन दृष्टी और आधुनिक दृष्टी मे भी बहुत अंतर है! मनुष्य शरीर में ऑख,कान,नाक,त्वचा,जिव्हा, हाथ और पैर ये सात भोग साधन है इन्ही के सहारों पर मानव संसार के साथ लेन देन करता है! अपना ताल

मेल बैठता है चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम मोक्ष, की प्राप्ती करता है इन अवयवों को कार्यक्षम बनाये रखने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है आप तेजस्वी हो बलवानहो,

“विर्यवान हो मुझे भी सब देदो,
तेजो दसि तेजो मयि देहि“

विकलांगता के कई प्रकार होते है पर हिन्दी काव्य साहित्यमे विकलांगता दिव्यांगता को लेकर स्वतंत्र रुपसे चर्चा नही है! किसी प्रसंग या कथा की आवश्यकता होने पर ही विकलांगता की बात की जाती है! वह भी बहुत हल्के ढंगसे विकलांगता एक तरह से उपेक्षित तिरस्कृत विषय रहा है! विकलांगों की उपेक्षा उपहास की मानसिकता नये रुप में आधुनिक भारतीय साहित्यमें आई है! कालानुरुप रासो काव्य से लेकर आधुनिक काल के लिलाधर मंडलोई सटीक प्रतिक व्दारा अपने संघर्ष और अस्तित्व को दर्शाने तक का पिरचय करवाया!

अध्यक्षीय समारोप डॉ.सतीशजी यादव ने विकलांगों के प्रति सृजन साहित्यकांरो के साथ साथ भारतीय लोगों की! मानसिकता को जरुरी कहते हुए. विकलांगो के प्रति आदर का भाव जागृत होने की जरुरत महसूस की! दिव्यांग भी एक मानव ही है उसे भी मानवीय ढंगसे जीवन जीना अच्छा लगता है! उसे जीने दो दिव्यांगता को लेकर अपना ज्ञापन गलत सोच ही हमारे भारतीयों की लगी मानसिक विकलांगता है! ऐसे विचार व्यक्त किये. इस सत्र का आभार ज्ञापन प्रा.डॉ.शिवाजी वडचकर ने किया!

तृतीय गोष्टी

शोधआलेख वाचन

अंर्तविषयक एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी के लिए, महाराष्ट,उत्तरमहाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, केरल आदि प्रांतोसे शोधालेख प्रचुरमात्रा में प्राप्त हुये उन्ही शोधालेखे मेंसे चुनिंदा शोधआलेख का वाचन उस गोष्टी के विषय प्रर्वतक डॉ. रेविता कावळे बहीर्जी स्मारक महाविद्यालय वसमत और गोष्टी के अध्यक्ष डॉ.प्रकाशजी खुळे वसंत महाविद्यालय केज के रुप में उपस्थित थे.

इस सत्र में डॉ. रेविता कावळे ने अपने मतंव्यमें मनुष्य समाज के साथ जुडा हुआ रहता है! वह अंर्तमन परबाहरी परिवेश का काफी प्रभाशील रहता है. वह जन्म से लेकर

मृत्यु तक समाज के साथ जुडा हुआ रहता है. फिर वह मानव सकलांग हो अथवा विकलांग उसके मन पटलपर बाहरी परिवेश का प्रभाव एंव प्रतिक्रियाओं का बहूत असर होता है! केवल शरीरिक विकास से ही उसका चारित्रीक विकास नहीं होता बल्की समाज के साथ जुडे रहने से उसका मानसिक भावनिक और बौध्दीक विकास होता है. इसीलिए विकलागों को समाज में सम्मान आदर और प्रतिष्ठा मिलती चाहिए. विकलांगता को अभिषाप न मानकर एक विशेष वरदान के रुपमें देखने का दृष्टिकोन अपनाना चाहिए.

अध्यक्षीय समारोप में डॉ.वसंतजी खुळे ने विकलांगता मानसिक हो अथवा शारीरिक व्यक्तिगत विकास के लिए असंतुलन निर्माण करती है. मानसिक दृष्टीसे विकलांग अपनी भावनाओं पर काबु नहीं कर पाता है. विकलांग व्यक्ति समाज के लिए भी एक प्रतिमान स्थापित कर सकता है. इस तरह से अपना मंतव्य व्यक्त किया.

चतुर्थ गोष्टी

अंर्तविषयक एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी के चतुर्थ गोष्टीके विषय प्रवर्तक डॉ. सुरजितसींह परिहार ज्ञानोपासक महाविद्यालय जिंतूर ने विषय प्रवर्तक के रुप में विकलांगो की सामाजिक स्वीकार्यतापर अधिक ध्यान दिया विकलांगों का पुनर्सन विकलांगों की यातनाएँ उनके लिए समाज में सुयोग्य वातावरण निर्माण करना अत्यंत जरुरी है. यानी सिर्फ रैम्प बनाना, बैठने के लिए अलग सी व्यवस्था करना जैसे प्रयासों के साथ साथ उनमें आत्मविश्वास जागकर वे सर उठाकर चल सकें.

अध्यक्षीय समारोप डॉ.सतीशजी यादवने किया विकलांग ता से व्यक्ति शारीरिक यातनाओंके अतिरिक्त मनोवेज्ञानिक और सामाजिक यातनाओंसे भी त्रस्त रहता है लेकिन विकलांगो ने किसी भी प्रकार की विकलांगता का सामना एक साधारण चुनौती के रुप में करना चाहिए. विकलांगो को समस्याओं का सामना करने के लिए समाज के अन्य जो सकलांग है! उन्होने प्रेरित करना चाहिए. या तो सामन्य लोग और विकलांग लोगों में सम्मानजनक समन्वय होना चाहिए. वास्तवमें विकलांगता अधिकतर परिस्थितियों पर निर्भर होती है. अगर परिस्थितीयों को अनुकूल बनाया जायेगा तो विकलांग व्यक्तियों को कामयाब होनेसे कोई नहीं रोक सकेंगा. परिस्थितियों पर मात कर विकलांग लोगों को

कार्य करना चाहिए. साथ ही साथ सामाजिक व्यवस्था कोभी अनुकूल बनाया जायेगी. समाज में विकलांगो की भी अच्छी भागीदारी निश्चित हो जायेगी.

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

पंचम गोष्टी
समापन समारोह

इस गोष्टी के लिए अध्यक्ष के रुप में संस्था की उपाध्यक्षा मा.सौ.जोतिताई कदम उपस्थित थी. इसमें उन्होंने शोधालेख कर्ताओं को धन्यवाद देकर प्रमाणपत्रों का वाटप किया. संगोष्टी के बारे में विचार व्यक्त करने के लिए डॉ.शिवाजी वैद्य, डॉ.नरसिंगदास बंग, डॉ.दत्तु शेवाळे, आदि प्रतिभागीयों ने हिस्सा लिया.

विशेष मार्गदर्शक के रुप में डॉ.वसंतजी सातपुते ने विकलांगता यह पूरी चिंता का विषय है. विकलांगों को समाज में उच्चित सम्मान मिलना चाहिए. उन्ही पर होनेवाले अत्याचार देखने का दृष्टीकोन बदलना चाहिए. यह अब हमने करना आवश्यक है. तो अध्यक्षीय समारोप में मा.सौ.ज्योतीताई कदमने विकलांग से जुडी कहानिंया आज बहुत मात्रा में दिखायी देती है. विकलांगो की आर्थिक, पारिवारीक, सामाजिक, आदि समस्याओं को साहित्यकारोंने दया सहानुभूति, करुणा, स्नेह और सेवा भाव को व्यक्त कर लोंगो को भी प्रेरित किया है. यह साहित्य विकलांगों मे स्वाभिमान ही नही जगाती बल्की उत्साह, प्रेरणा तथा जिजीविषा प्रदान करते हुए उन्नति का पथ प्रशस्त करता है. इस गोष्टी का सुत्रसंचालन डॉ.अविनाश कांसाडे ने किया. आभार ज्ञापन डॉ.वनिता कुलकर्णी ने किया!

डॉ. वड्चक्कर एस.ए.
समन्वयक

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

Late. Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

"भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श" राष्ट्रीय संगोष्ठी मे दिपप्रज्वलन करते वक्त प्र.कुलपती डॉ.जोगेंद्रसिंह बिसेन (स्वा.रा.ती.म.वि.नांदेड) अन्य अतिथीमें ह. शि.प्र.म.के अध्यक्ष मा.परमेश्वरजी कदम भूतपूर्व विधायक मा.श्री.व्यंकटरावजी कदम, डॉ.वसंतजी सातपुते और बीजवक्ता डॉ.ठाकुरदास एम.बी.

"भारतीय समाज और विकलांग विमर्श" संगोष्ठी स्मारिका का विमोचन करते हुए

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
Sonpeth Dist. Parbhani

Late. Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

"भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श" संगोष्ठी उदघाटन समारोह में प्रस्ताविक करते हुए प्रधानाचार्य डॉ.वसंतजी सातपुते तिथि ०५ अक्तु २०१९

"भारतीय समाज और विकलांग विमर्श" के राष्ट्रीय संगोष्ठी के उदघाटक के रुप मे स्वा.रा.ती.म.के.प्र.कुलगुरु डॉ.जोगेंद्रसिंहजी बिसेन

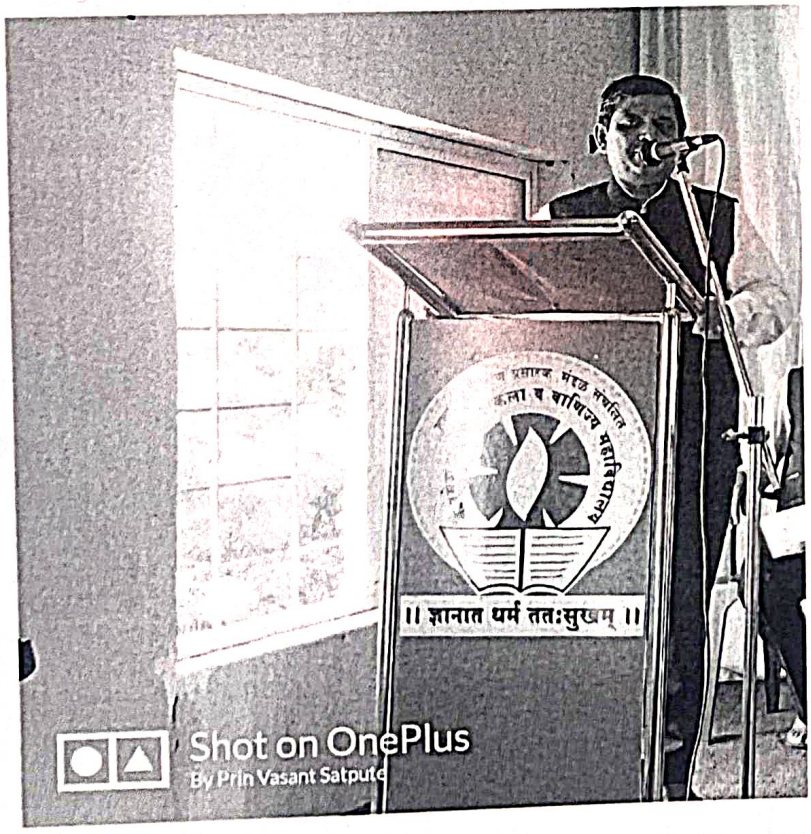

Late. Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

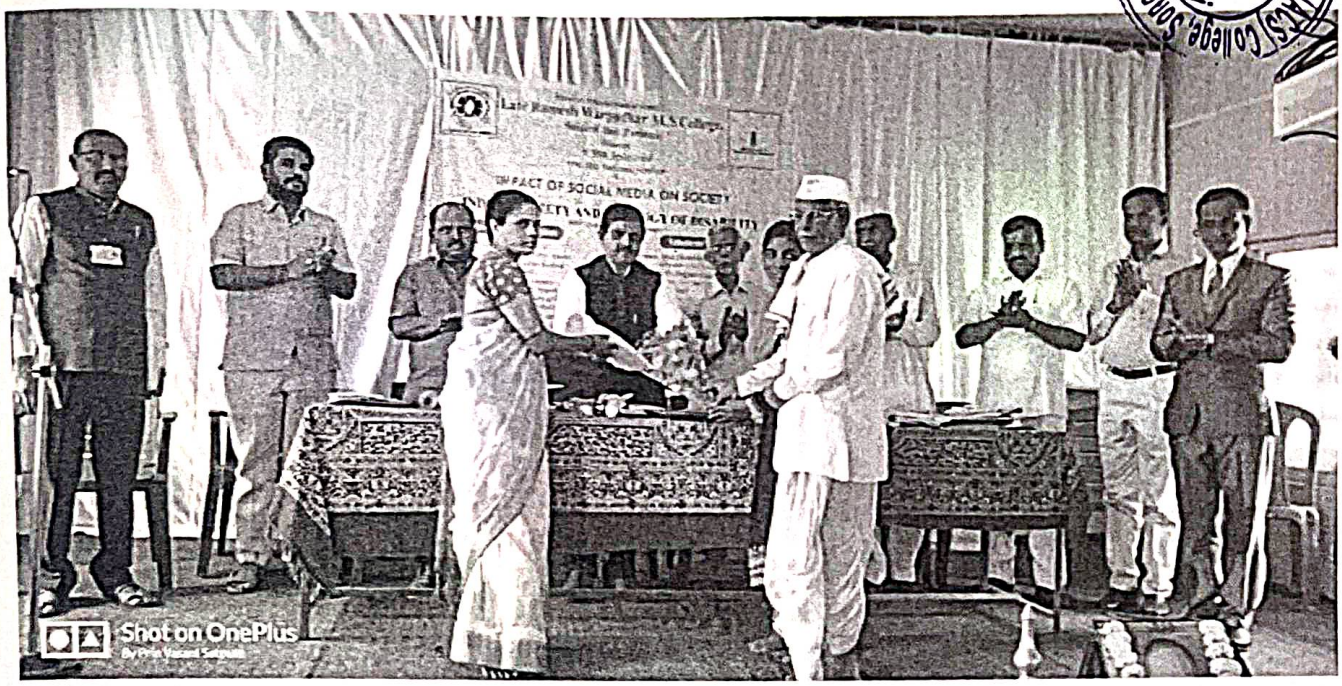

"भारतीय समाज और विकलांग विमर्श" राष्ट्रीय संगोष्ठी मे विकलांग छात्र के पालक को कॉलेज युनिफार्म प्रदान किया गया डॉ.रेविता कावले और विचार मंच

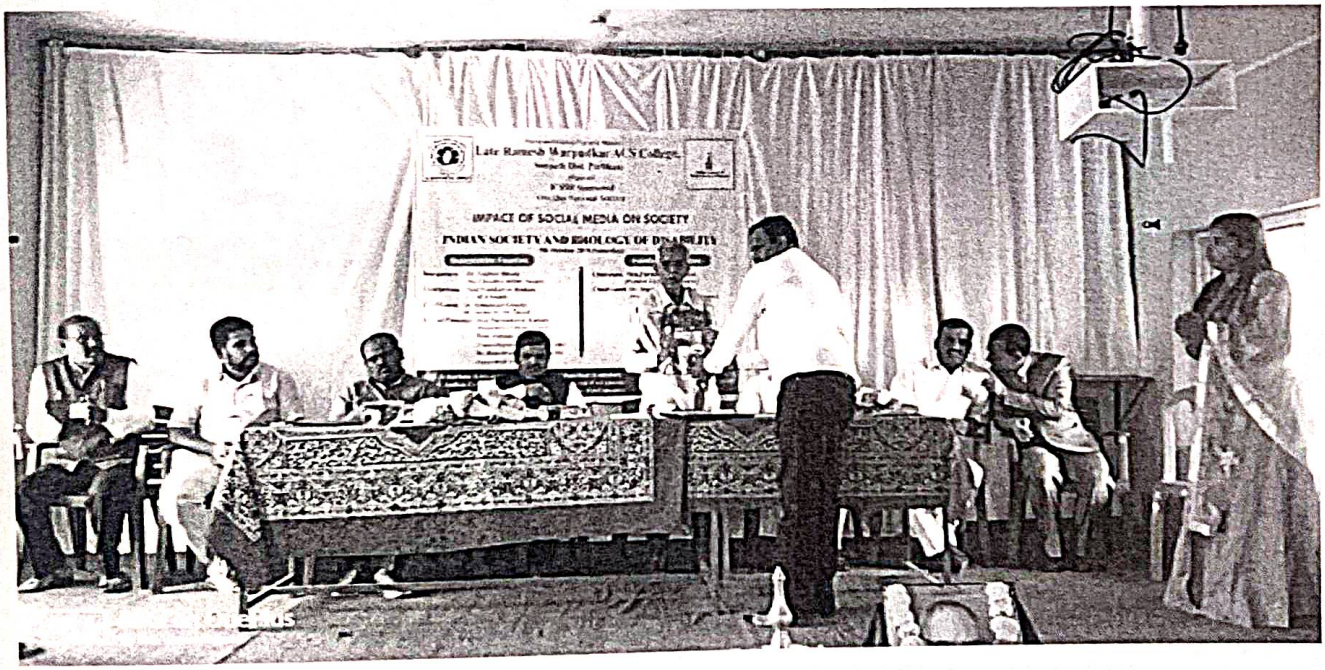

"भारतीय समाज और विकलांग विमर्श" के बीजवक्ता डॉ.ठाकुरदास एम.बी. का स्वागत करते हुए संयोजक डॉ.वडचकर एस.ए.

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth
Dist. Parbhani

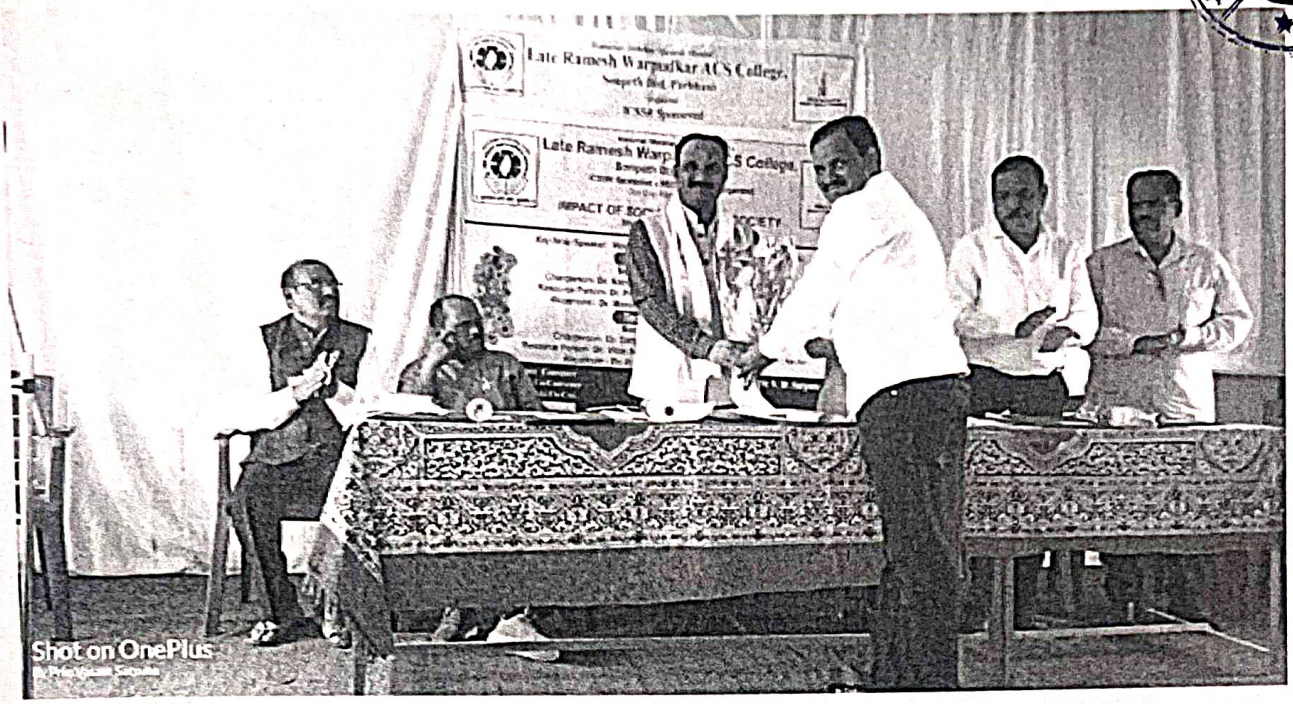

"भारतीय समाज और विकलांग विमर्श" बीजभाषण सत्र के अध्यक्ष डॉ.सतिशजी यादव का स्वागत करते हुए संयोजक डॉ.वडचकर एस.ए

"भारतीय समाज और विकलांग विमर्श" राष्ट्रीय संगोष्ठी में बीजभाषक डॉ.ठाकुरदास एम.बी.और विचारमंच

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

Late. Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

"भारतीय समाज और विकलांग विमर्श" तृतीय गोष्टी का अध्यक्षीय समारोप करते हुए डॉ.रेविता कावले

"भारतीय समाज और विकलांग विमर्श" चतुर्थ गोष्टी के विषय प्रवर्तक डॉ.सुरजितसींह परिहार

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth Dist. Parbhani

चतुर्थ गोष्ठी का अध्यक्षीय समारोप करते वक्त डॉ.सतिशजी यादव

"भारतीय समाज और विकलांग विमर्श" राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन समारोह में मा. सौ.ज्योतीताई कदम का स्वागत करते हुए डॉ.वनिता कुलकर्णी

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudker (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani